संचालनालय,
किसान कल्याण तथा कृषि विकास
मध्यप्रदेश भोपाल

क्र/एन.एम.ओ.ओ.पी./एक्शन प्लान/08/2015–16/774 भोपाल, दिनांक 19/11/2015

प्रति,

डॉ0 अनुपम बारिक
एडिशनल कमिश्नर (तिलहन)
कृषि एवं सहकारिता विभाग
कृषि भवन नई दिल्ली

विषय :– दिनांक 05.11.2015 को वीडियो कॉन्फ्रेन्सिग में दिये गये निर्देशानुसार सोयाबीन के कम उत्पादन के संबंध में टीप भेजने बावत्।

---000---

उपरोक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि दिनांक 05.11.2015 को वीडियो कॉन्फ्रेन्सिग में दिये गये निर्देशानुसार राज्य में सोयाबीन के कम उत्पादन के संबंध में टीप, पत्र के साथ संलग्न कर आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है।

संलग्न :– उपरोक्तानुसार।

18/11/15
संचालक
किसान कल्याण तथा कृषि विकास
मध्यप्रदेश भोपाल

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग दिनांक 5 नवम्बर 2015 में दिये गये–निर्देश के पालन में "खरीफ –2015 में सोयाबीन के कम उत्पादन के संबंध में टीप"

मध्यप्रदेश का कुल भौगोलिक क्षैत्रफल 307.56 लाख हैक्टेयर है, जिसमें निरा कास्त योग्य रकबा 154.55 लाख हैक्टेयर है। खरीफ फसलों के अंतर्गत क्षैत्र 124.65 लाख हैक्टेयर तथा रबी फसलों के अंतर्गत 112.15 लाख हैक्टेयर है। तिलहनीं फसलों के अंतर्गत, खरीफ में 70.68 लाख हैक्टेयर एवं रबी के अंतर्गत 9.17 लाख हैक्टयर है। इस प्रकार कुल तिलहन का क्षेत्र 79.85 लाख हैक्टेयर है।

खरीफ–2015 में तिलहन फसलों के अंतर्गत सबसे अधिक क्षेत्र सोयाबीन फसल का लगभग 59.06 लाख हैक्टयर है ।

राष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश के तिलहनीं फसलों की हिस्सेदारी लगभग 22 प्रतिशत है। राज्य में तिलहनीं फसलों के अंतर्गत कुल फसलों का, लगभग 80 प्रतिशत क्षेत्र में सोयाबीन फसल उगाई जाती है ।

प्रदेश में उत्पादन एवं उत्पादकता के हिसाब से 22 जिले ऐसे हैं जहाँ सबसे अधिक सोयाबीन फसल बोयी जाती है, इन जिलों में लगभग 48 लाख हैक्टयर क्षेत्र आता है, जिसमें छिन्दवाड़ा, सिवनी, नरसिंहपुर, सागर, इंदौर, धार, खंडवा, उज्जैन, मंदसौर, नीमच रतलाम, देवास, शाजापुर, शिवपुरी, गुना, सीहोर, रायसेन, विदिशा, राजगढ, होशंगाबाद, हरदा एवं बैतूल शामिल हैं ।

मध्य प्रदेश में वर्ष 2015–16 में सोयाबीन के उत्पादन का अनुमानित लक्ष्य 85.10 लाख मेट्रिक टन रखा गया था, जिसके विरुद्ध 38.40 लाख मेट्रिक टन उत्पादन प्राप्त होंने की संभावना है। इस वर्ष राज्य में सोयाबीन की फसल का उत्पादन कम प्राप्त होंने के संबंध में मुख्य कारण निम्नानुसार हैं :–

सोयाबीन की फसल की बोनीं माह जून–2015 में मानसून आनें के पश्चात् कुछ क्षेत्र में कृषकों के द्वारा बोनीं की गई थी एवं शेष क्षेत्र

में माह जुलाई में बोनीं पूर्ण की गई थी। प्रदेश के कुछ जिलों में माह अगस्त में लगातार वर्षा होनें एवं कुछ जिलों में ड्रई–स्पेल लंबा होंने से सोयाबीन की उत्पादकता में कमीं हुई, इसी के साथ राज्य के लगभग 14 जिलों में सोयाबीन फसल पर पीलामोजेक का असर अधिक हुआ जो कि मुख्य रुप से जेएस–335 एवं जेएस–95–60 किस्मों में देखा गया इस कारण से उन जिलों के प्रभावित क्षेत्र पर उत्पादन पर विपरीत असर हुआ।

प्रदेश में इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, शाजापुर एवं राजगढ़ जिलों में अधिक वर्षा होंने से सोयाबीन उत्पादन अधिकतम प्रभावित हुआ इन जिलों में फसल की उत्पादकता पर पूर्णरुपेण असर हुआ। प्रदेश के अन्य क्षेत्र–जबलपुर, कटनी, बालाघाट, सिवनी, मंडला, नरसिंहपुर, सागर, दमोह, पन्ना, टीकमगढ़, छतरपुर, रीवा, सीधी, सिंगरोली, शहडोल, अनूपपूर, उमरिया, मुरैना, श्योपुरकला, भिन्ड, ग्वालियर, शिवपुरी एवं दतिया कुल 23 जिलों में वर्षा सामान्य से कम होंने के साथ ही फसल पर फूल आनें के समय एवं फलियों में दानें भरते समय वर्षा नहीं होंने से सोयाबीन फसल का उत्पादन कम हुआ।

18/11/15

संचालक

किसान कल्याण तथा कृषि विकास

म0प्र0भोपाल